

डॉB डेवडि हॉवरडÆ जोशुआÆरूथÆ सत्र ÇDÆ जोशुआ ÇÇ गबिोन

© 2024 डेवडि हॉवरड और टेड हलिडेब्रांट

यह डॉ. डेवडि हॉवरड रूथ के माध्यम से जोशुआ की पुस्तकों पर अपने शक्तिषण में हैं। यह सत्र संख्या 15, जोशुआ 10, दक्षिणी अभियान है।

इस खंड में, हम जोशुआ अध्याय 10 के बारे में बात करने जा रहे हैं और इसलिए कृपया अपनी बाइबलें उसमें खोलें।

और वास्तव में, जैसा कहिमाने पहले अध्याय 9 से 11 में उल्लेख किया है, एक तरह से एक ऐसी जगह के रूप में जाना जाता है जहां आपके पास कनानी राजाओं के गठबंधन हैं जो इजराइल के खिलाफ इकट्ठे हुए हैं। अध्याय 9 श्लोक 1, 10 श्लोक 1, और अध्याय 11 श्लोक 1 सभी उन बातों का उल्लेख करते हैं। अध्याय 10 और 11 भी एक साथ और भी अधिक नकितता से फिट बैठते हैं।

अध्याय 10 राजाओं के दक्षिणी गठबंधन के वरिद्ध अभियान के बारे में बताता है। अध्याय 11 राजाओं के उत्तरी गठबंधन की कहानी बताता है। इसलिए, यदि आप कनान की लड़ाइयों पर नियंत्रण पाने की कोशिश के बारे में सोचना चाहते हैं, तो यह याद रखने में मदद मिल सकती है कि वे आए थे, इस्राएली पहले जेरिको और ए में आए थे।

तो, हमारे पास है, और उन्होंने पीछा किया, खैर यह मध्य कनान की तरह यहां की लड़ाई थी। अध्याय 10, दक्षिणी राजाओं का एक गठबंधन है और उन्होंने अध्याय के अंत में दक्षिणी राजाओं का पीछा किया और फरि वे उत्तर की ओर चले गए और हांसोर के राजा और वहां के राजाओं के अन्य गठबंधन के खिलाफ हो गए। तो, कनान में इस्राएलियों की लड़ाई का एक प्रकार से तीन गुना जोर है।

पहले देश के मध्य पहाड़ी क्षेत्र में और फरि दक्षिण में और फरि उत्तर में। यह समग्र बड़ी तस्वीर है जो हम यहां देखते हैं। तो, अध्याय 10, हम वास्तव में, यह नहीं है, अध्याय 10 में हमला, दलिचस्प रूप से पर्याप्त और वडिबनापूर्ण रूप से, इजराइल के खिलाफ हमला नहीं है।

हमें इस बारे में राजा से पता चला है। तो, हम पद एक में देखते हैं, जैसे ही यरुशलेम के राजा अडोनाई जेडेक ने सुना कि कैसे यहोशू ने ए पर कब्जा कर लिया है और उसे वनिश के लिए समर्पित कर दिया है, इत्यादि। और पद एक के मध्य में, अन्त की ओर, गबिोन के नवासियों ने इस्राएल के साथ किस प्रकार मेल किया था, यह उनके बीच में था।

वह बहुत डर गया क्योंकि गबिोन राजकीय नगरों के समान एक बड़ा नगर था, और वह ए से भी बड़ा था, और उसके सब पुरुष योद्धा थे। तो, अडोनाई जेडेक को राजाओं का गठबंधन मिलता है और श्लोक चार में, आओ हम मेरी मदद करें और गबिोन पर हमला करें। तो, हमला इजराइल के खिलाफ नहीं है।

यह गबिोन शहर के उनके साथी कनानियों के खिलाफ है, जो मध्य पहाड़ी देश में भी है। इसलिए, वे सभी इकट्ठे हुए और

पद पाँच के अंत में गबोन के वरिद्ध पड़ाव डाला और उसके वरिद्ध युद्ध किया। लेकिन अध्याय नौ में इजराइल के साथ की गई संधि के कारण इजराइल युद्ध में फंस जाता है।

और इसलए, श्लोक छह, अध्याय 10 में, गबोन के लोगों ने गलिगाल के शविरि में यहोशू को यह कहते हुए भेजा, और फिर एक साथ चार या पांच करियाओं का एक प्रकार का त्वरति स्टेकाटो संदर्भ है। अपने सेवकों से अपना हाथ न छुड़ाओ। जल्दी से हमारे वरिद्ध आओ, हमें बचाओ, हमारी सहायता करो।

तो, धमाका, धमाका, धमाका, धमाका। जसि तरह से पाठ को लिखा गया है उससे हमें गबोनियों की घबराहट का एहसास होता है। वे अब पांच राजाओं और उनके लोगों के इस विशाल गठबंधन, एक शहर की दया पर निर्भर हैं।

और इसलए, वे कह रहे हैं, हमने जो संधि की है, उसके कारण आपको हमारी सहायता करने की आवश्यकता है। तो यही चीज इस्राएलियों को इस लड़ाई में खींचती है। तो, पद सात में, यहोशू गलिगाल से जाता है, वह और लोग, और परमेश्वर यहोशू से कहता है, पद आठ, डरो मत।

मैंने उन्हें तुम्हारे हाथों में सौंप दिया है। उनमें से एक भी मनुष्य तुम्हारे साम्हने टकि न सकेगा। फिर, अध्याय एक में भगवान ने जो कहा, उसकी प्रतध्वनी।

डरो मत. कोई भी आदमी आपका सामना नहीं कर पाएगा. तो, जोशुआ अचानक उनके पास आता है।

श्लोक नौ में वह पूरी रात गलिगाल से मार्च करता है। और फिर भगवान एक और महान चमत्कार करते हैं। हमने अध्याय तीन में पानी को पार करने का महान चमत्कार देखा है।

दीवारों के गरिने, ऐ में मदद का महान चमत्कार देखा है। तो, यहोशू की पुस्तक उन चमत्कारों से भरी है जो परमेश्वर ने किए और कैसे परमेश्वर ने इस्राएल की ओर से लड़ाई लड़ी। हमने इस बारे में बात की है कि यह कैसा मॉडल है, भगवान चीजों को कैसे करना चाहते थे।

और इस्राएल को राष्ट्रों की तरह अपने महान योद्धा या राजा पर भरोसा नहीं करना था, बल्कि परमेश्वर को यह करना था। और यहाँ वह श्लोक 10 में फिर से ऐसा करता है। और वहाँ फिर से करियाओं की एक स्टेकाटो श्रृंखला है, उनमें से लगभग सात अब अगले कुछ छंदों में हैं।

तो, श्लोक 10 कहता है, प्रभु ने, पहले, उन्हें इस्राएल के सामने घबरा दिया। नंबर दो, इस्राएल ने उन पर बड़ा प्रहार किया। इस्राएल ने बेथहोरोन की चढ़ाई के मार्ग से उनका पीछा किया।

मकेदा तक मार डाला। पद 11, जब वे इस्राएल के साम्हने से भागे, और बेथहोरोन की चढ़ाई से उतर रहे थे, तब यहोवा ने आप ही आकाश से बड़े बड़े ओले बरसाए। अजेका तक वे मर गए।

और जतिने इस्राएली तलवार से मारे गए, उन से अधिक ओलोंके कारण मरे। तो, यह एक अद्भुत और बहुत प्रभावशाली जीत है जो इज़राइल ने जीती। और यह भगवान ही है जिसने यहां उनके लिए काम किया है।

भगवान उन्हें घबराहट में डाल देते हैं। श्लोक 10, वे इस्राएलियों की दया पर निर्भर हैं जिन्होंने गबोन में उन पर बड़ा प्रहार किया। श्लोक 10, उन्हें खदेड़ दिया, और उन्हें मार डाला।

परन्तु जैसे ही वे भाग रहे हैं, परमेश्वर उन पर ओलों से प्रहार करता है। और परिणाम यह है कि कैनानी लोग दो अलग-अलग स्रोतों से मर रहे हैं। एक, इस्राएली तलवारों से, परन्तु ओलों से भी।

और ओलावृष्टि इस्राएली तलवारों से अधिक हानि पहुँचाती है। तो, इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस अध्याय में एक महान चमत्कार है। और मेरा विचार है कि यह वह चमत्कार है जिस पर अध्याय वास्तव में ध्यान केंद्रित कर रहा है।

अब, अध्याय का अगला भाग, श्लोक 12 से शुरू होकर, हमें कुछ नई चीज़ की ओर ले जाता है। यह कहता है, ओह, जिस समय यह हो रहा है, उसी समय यहोशू ने यहोवा से बातें कीं, जिस दिन यहोवा ने एमोरियोंको इस्राएलियोंको अर्थात् कनानियोंके हाथ में कर दिया। और उस ने इस्राएल के साम्हने कहा, सूर्य गबोन पर, और चन्द्रमा अय्यालोन की तराई में ठहरा है।

और जब तक राष्ट्र ने अपने शत्रुओं से प्रतیشोध नहीं ले लिया तब तक सूर्य रुका रहा, चंद्रमा रुका रहा। और मैं अनुमान लगा रहा हूँ कि आपकी अधिकांश बाइबिल में, इसे इस तरह से मुद्रित किया गया है कि यह एक छोटी कविता की तरह दिखती है। अंगरेजी की अधिकांश आधुनिक बाइबिलें अब आपके पेज पर कविता को टाइपोग्राफ़िक रूप से कविता की तरह सूचीबद्ध दिखाती हैं।

और हमारे पास यही है, एक छोटी सी कविता। अब, इस बात पर बहुत बहस हो रही है कि इस परिच्छेद में वास्तव में क्या हुआ था। अगली आयत, आयत 13 के अंत में कहा गया है, क्या यह जशर की पुस्तक में नहीं लिखा गया है? सूर्य आकाश के मध्य में रुका रहा, और लगभग पूरे दिन तक अस्त होने की जल्दी नहीं की।

पहले या उसके बाद कभी भी ऐसा दिन नहीं आया जब प्रभु ने किसी व्यक्ति की आवाज़ सुनी, प्रभु ने इस्राएल के लिए लड़ाई लड़ी। अब इस परिच्छेद को समझने के लिए कई प्रयास किए गए हैं और मैं उन सभी को यहां नहीं बताने जा रहा हूँ। आप देख सकते हैं, आप इंटरनेट पर देख सकते हैं, आप टिपिणियाँ देख सकते हैं।

मैंने जोशुआ पर एक टिपिणी लिखी थी जिसमें मैंने लगभग 12 पृष्ठों में, सभी अलग-अलग वकिलों में, नपिटाया है। लेकिन मैं एक बात कहूंगा. परंपरागत रूप से, निश्चित रूप से, यह धारणा रही है कि यहां जो कुछ हुआ वह एक बड़ा चमत्कार था कि अब वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, पृथ्वी ने घूमना बंद कर दिया और सूर्य आकाश में स्थिर दिखाई दिया।

चंद्रमा ने नहीं किया. और इसका कारण यह होगा कि जोशुआ को ऐसा महसूस हुआ कि उसे युद्ध पूरा करने के लिए और अधिक समय की आवश्यकता है। और इसलिए, उन्होंने भगवान से दिन को लंबा करने के लिए कहा और वे युद्ध समाप्त करने में सक्षम हो गए।

आधुनिक समय में, इसे उचित ठहराने या इसे साबित करने में मदद करने के लिए और भी स्पष्टीकरण दिए गए हैं। इसका एक संस्करण है. 19वीं सदी की एक दलितस्प कहानी है जो इंग्लैंड से सामने आती है जहां यह दावा किया जाता है कि इंग्लैंड के ग्रीनविच में रॉयल वैधशाला में खगोलवदि गणना कर रहे थे और वे किसी तरह यह पता लगाने में सक्षम थे कि इतिहास में, वहाँ था एक दिन गायब.

और इसका पता जोशुआ की पुस्तक, अध्याय 10 से लगाया गया था। लेकिन गणना से पता चला कि वास्तव में यह केवल 23 घंटे और 20 मिनट था। और इसलिए, 40 मिनट गायब हैं।

और फिर यह याद आया कि हिजिकियाह के बाद के दिनों में, धूपघड़ी पीछे की ओर चली जाती है, और वह 40 मिनट का हिसाब रखती है। तो, इसे यहां बाइबिल की कहानी की एक अद्भुत और चमत्कारी अतिरिक्त-बाइबिल वैज्ञानिक पुष्टि के रूप में देखा गया है कि एक लापता दिन है। मेरा विचार है कि यह बाइबिल की कहानी का समर्थन करने का एक नेक इरादे वाला प्रयास है, लेकिन यह गुमराह करने वाला है।

यदि आप Google जोशुआज़ लॉन्ग डे पर जाएंगे, तो आपको सभी प्रकार की वेबसाइटें दिखाई देंगी, कुछ इसका समर्थन कर रही हैं, कुछ इसका खंडन कर रही हैं। लेकिन उसी कहानी का एक और प्रसिद्ध संस्करण लगभग 100 साल बाद आता है जिसमें दावा किया गया है कि 1964 में, 60 के दशक की शुरुआत में, ग्रीनबेल्ट, मैरीलैंड में नासा सुविधा में नासा वैज्ञानिक भविष्य में अंतरिक्ष यात्राओं के लिए गणना कर रहे थे और कोशिश कर रहे थे। भविष्य और अतीत में समय का लेखा-जोखा रखें। और उनके कंप्यूटर इतिहास में बहुत पहले से ही बंद हो गए थे।

और यह पता चला कि एक बार फिर, एक लापता दिन था। और फिर किसी को यहोशू की कहानी याद आई और उन्हें एक बाइबिल मिली और उन्होंने जाकर इसे पाया और इसलिए उन्होंने पुनर्गणना की और कंप्यूटर चालू हो गया। लेकिन वे फिर रुक गए क्योंकि 40 मिनट गायब थे और फिर उन्हें हिजिकियाह की कहानी याद आई और सब कुछ ठीक हो गया।

इसलिए, मुझे यह दलितस्प लगता है कि आपको 19वीं सदी में ग्रीनविच, इंग्लैंड के एक संस्करण और फिर 20वीं सदी के एक संस्करण में बिल्कुल वही कहानी मिलती है। और यदि आप इंटरनेट पर काफी देर तक खोजेंगे तो संभवतः आपको इसके अन्य संस्करण भी मिल सकते हैं। तो, मेरे लिए, यह वास्तव में, फिर से, बहुत नेक इरादे वाला है और कई ईसाई इसे यह देखने के लिए मानते हैं कि वैज्ञानिक बाइबिल का समर्थन करने या साबित करने में कैसे मदद करता है।

लेकिन मैं आश्चर्य नहीं हूँ. मुझे ऐसा लगता है कि यह एक शहरी कविदंती की प्रकृति है जिसे बार-बार दोहराया जाता है। तो, क्या सूर्य वास्तव में स्थिर था? क्या दुनिया ने घूमना बंद कर दिया ? मुझे लगता है यह संभव है.

जाहरि है, ईश्वर कुछ भी कर सकता है और वह इसे इस तरह से कर सकता है कि वह दिन खगोलीय गणना में दिखाई न दे। वास्तव में, मुझे भीतिकविदों और दोस्तों ने बताया है कि आप किसी भी तरह से अतीत में खोए हुए दिन का पता नहीं लगा सकते हैं। इसलिए एक भीतिक

वज्रिजानी न होने के नाते, मैं इसे वहीं छोड़ दूँगा।

लेकिन क्या भगवान ने ऐसा कोई चमत्कार करवाया? क्या यह दूसरा चमत्कार था? पहला चमत्कार है ओलावृष्टि। दूसरा है... मैं आश्वस्त नहीं हूँ। मुझे ऐसा लगता है कि श्लोक 11 के अंत तक कहानी पूरी हो जाती है।

लड़ाई पूरी हो गई है। नुकसान किया गया है। इस्राएलियों ने बहुत से शत्रुओं को मार डाला है और ओलों ने ऐसा किया है।

बहुत बड़ा चमत्कार है। इसलिए, मुझे यकीन नहीं है कि भगवान ने दुनिया को अपनी धुरी पर घूमने से रोक दिया है। इसलिए नहीं कि मैं चमत्कारों में विश्वास नहीं करता।

मेरा मानना है कि जोशुआ की कविता में चमत्कार व्याप्त है, जिसमें ओलावृष्टि भी शामिल है। लेकिन मुझे नहीं लगता कि पृथ्वी स्थिर रही होगी और इतना लंबा दिन नहीं होगा। मैं जो सोचता हूँ वह इस पर आधारित है कि मैं पाठ्य-आधारित दृष्टिकोण के रूप में क्या अपनाऊँगा और इसका संबंध काव्यात्मक रूप में इस अंश की प्रकृति को गंभीरता से लेने से है।

यह एक छोटी कविता है, लेकिन यह काव्यात्मक है। और व्याख्यात्मक रूप से, जब हम ग्रंथों की व्याख्या करते हैं, तो हम सहज रूप से, किसी भी भाषा में, न केवल हब्रू में, बल्कि किसी भी भाषा में, हम चीजों के गद्य खातों की तुलना में सहज रूप से कविताओं को अलग तरह से व्यवहार करते हैं। कविता अधिक कल्पनाशील, अधिक भावनात्मक और अधिक आलंकारिक होती है।

कविता एक तरह से स्वर्ग तक, कल्पना की दुनिया तक पहुँचती है। मैंने यह कहते हुए सुना है कि जब शब्द विफल हो जाते हैं तो कविता मानवीय भावनाओं को व्यक्त करने में मदद करती है। यह हमें एक अलग स्तर पर ले जाता है।

तो आइए मैं आपको इसके कुछ उदाहरण देता हूँ जहाँ हम पवित्रशास्त्र में अन्यत्र देखते हैं। और पहला एक महान उदाहरण है जो हमें नरिगमन 15 में मिलता है। इसलिए, यदि आप अपनी बाइबल लेते हैं और नरिगमन 15 की ओर मुड़ते हैं, तो हम यहाँ जो देखते हैं वह इजराइल का वर्णन है जब वे मिस्र से बाहर आए थे और उन्होंने लाल सागर को पार कर लिया और परमेश्वर ने उन्हें फरौन की सेना इत्यादि पर महान विजय प्रदान की।

लेकिन गद्य वृत्तांत, उस घटना का कथात्मक विवरण नरिगमन 14 में पाया जाता है। इसलिए यदि आप पहले नरिगमन 14 को देखते हैं, तो हम वहाँ कहानी को सामने आते हुए देखते हैं। हम इस्राएलियों को लाल सागर पर आते हुए देखते हैं।

फरौन की सेना वापस आती है। भगवान उनके बीच एक बादल डालता है। पूरी रात हवा चल रही है।

समुद्र खुल जाता है। इस्राएल सूखी भूमि पर पार करता है। फरौन पीछा करने की कोशिश करता है।

समुद्र उनके ऊपर बंद हो जाता है और उन्हें हरा देता है। तो यह बहुत बड़ी जीत है। वह कहानी नरिगमन 14 में बताई गई है, और यह काफी लंबा अध्याय है, 31 छंद, और यह हमें कहानी का विवरण देता है।

अब, आप नरिगमन 15 में अपनी बाइबलि को देखें, और पहले 18 छंद, फरि से, एक कवति या एक गीत है। और इसे पद 15 में इस प्रकार पहचाना गया है। इसमें कहा गया है कि मूसा और इस्राएल के लोगों ने प्रभु के लिए यह गीत गाया। मैं प्रभु के लिए गाऊंगा।

उन्होंने शानदार जीत हासिल की है। घोड़े और सवार को समुद्र में फेंक दिया जाता है, आदि। श्लोक 21 हमें बताता है कि मरियम और महिलाओं ने एक ही बात गाई।

भगवान के भजन गाना। उसने शानदार ढंग से वजिय प्राप्त की है, आदि। उसका उल्लेख श्लोक 20 में किया गया है।

तो कवति उनहीं घटनाओं से कैसे नपिटती है? और मैं कहूंगा कि यह गीत क्या है, यह मूलतः एक भजन है। यह धन्यवाद का गीत है। यह वजिय का गीत है।

और यह फरौन की सेना पर महान जीत का जश्न मना रहा है। और यह कहानी को एक अलग दृष्टिकोण से बताता है। अब, कवति का उद्देश्य, गीत का उद्देश्य हमें सभी विवरण देना नहीं है।

हमारे पास पहले से ही अध्याय 14 में वे मौजूद हैं। गीत का उद्देश्य अध्याय 14 की घटनाओं के बारे में भजनात्मक तरीके से प्रतबिबिति करना है। इसलिए, इसे अलग तरीके से किया गया है।

वहां भावनात्मक भाषा अधिक है। वहाँ अधिक आलंकारिक भाषा है। उदाहरण के लिए, अध्याय 15, श्लोक 4 को देखें। फरौन के रथों और उसकी सेना को उसने समुद्र में फेंक दिया।

उसके चुने हुए अधिकारी लाल सागर में डूब गये। यदि आप पहले से ही समुद्र तल पर हैं तो आप लाल सागर में कैसे डूब सकते हैं? तुम्हें मालूम है, वे समुद्र की तलहटी में से होकर जा रहे हैं और बाढ़ उन्हें ढक रही है। तुम कैसे डूब सकते हो? तो ठीक है, इसकी कुछ प्रकार की आलंकारिक व्याख्या है।

श्लोक 5, बाढ़ ने उन्हें ढक दिया। वे पत्थर की नाई गहराई में उतर गए। यदि आप पहले से ही समुद्र तल पर हैं तो आप ऐसा कैसे कर सकते हैं? तो फरि, मुझे ऐसा लगता है कि यह घटनाओं का वर्णन करने का एक काव्यात्मक, आलंकारिक तरीका है।

श्लोक 10, तू अपनी हवा से उड़ा। समुद्र ने उन्हें ढक लिया। वे प्रचण्ड जल में सीसे के समान डूब गये।

एक ही बात। तो, हमारे पास एक बहुत अलग तस्वीर है। शूषक भूमि शिबद जनुका उल्लेख मैंने जोशुआ अध्याय 3 में पछिले संदर्भों में किया है, जब उन्होंने सूखी भूमि पर जार्डन को पार किया था।

यह वशिष्ट शब्दों में से एक है, सूखी ज़मीन बनाम गीली। अध्याय 14 में यह चार बार आता है। कविति में यह शून्य बार आता है।

तो, हमारे पास कविति में पानी की दीवारों और सूखे समुद्र तल की तस्वीर नहीं है। कविति में हमारे पास लाल सागर में पानी के डूबने और डूबने की एक तस्वीर है। क्या वह कोई भविष्य घटना है? कुछ वदिवानों ने, जिनमें मेरे डॉक्टरेट कार्यक्रम के एक प्रोफेसर भी शामिल थे, अध्याय 14 की घटनाओं पर पूरी तरह से अविश्वास किया और कहा कि पानी का वभिजन कभी नहीं हुआ था।

इसराएली लाल सागर तक पहुँचे। उन्हें कुछ नावें मलिन और वे पार हो गये। मसिरवासी अपनी नावों से पार जाने का प्रयास कर रहे थे।

एक तूफान आया और वे सभी डूब गये। मेरा मानना है कि मेरे प्रोफेसर ने इसे बलिकूल गलत बताया था। वह कविति को अधिक शाब्दिक रूप से ले रहे थे और कथा को त्याग रहे थे।

मेरा दृष्टिकोण व्याख्यात्मक रूप से यह है कि कथा पाठ में अधिक शाब्दिक और कवितिओं में अधिक आलंकारिक व्याख्यात्मक भाषा है। तो, मुझे लगता है कि वह उस समय गलत था। तो यह कविति बनाम गद्य को समझने के एक सुंदर परीक्षण मामले का एक उदाहरण है।

यहां कविति अध्याय 14 की घटनाओं पर एक भजनात्मक प्रतबिबि है। यह महान जीत के लिए भगवान को धन्यवाद दे रही है। कविति में वही सारी बातें बताने की जरूरत नहीं है।

हमारे पास जज अध्याय 4 और 5 में इसका एक और उदाहरण है। इसलिए कृपया उसे खोलें। यहां संदर्भ यह है कि दबोरा और बराक लोगों के नेता हैं। दबोरा एक भविष्यवक्ता है और अंततः वह मुख्य नेता बन जाती है।

बराक एक तरह से उसका सहायक है। अध्याय 4 गद्य वृत्तांत में कहानी बताता है। अध्याय 5 दबोरा और बराक का गीत है।

अध्याय 5 श्लोक 1, उस दिन दबोरा और अबीनोअम के पुत्र बाराक ने गीत गाया। फिर यह चलता रहता है। आप अपने गद्य में इसकी कथा देख सकते हैं।

फिर, हमारे पास एक परीक्षण मामला है कि कविति घटनाओं से कैसे नपिटती है, कथात्मकता कैसे होती है, और गद्य घटनाओं से कैसे नपिटता है। तो, न्यायाधीश 4 में कहानी का समापन छंद 23 और 24 में है। यह एक प्रकार का गद्यात्मक विवरण है।

मैं यह जानने के लिए काफी बूढ़ा हो गया हूं कि 1960 के दशक में डुरगनेट नामक एक प्रसिद्ध टीवी श्रृंखला थी। डुरगनेट एक लघु पुलिस ड्रामा था और हार्ड-बॉइल्ड सार्जेंट फ्राइडे मुख्य किरदार था और वह हमेशा, आधे घंटे के भीतर, जो भी अपराध और रहस्य होते थे, उन्हें सुलझा देता था। लेकिन सार्जेंट फ्राइडे के पास एक हस्ताक्षर रेखा थी क्योंकि वह किसी भी अपराध के बाद की जांच कर रहा था।

और जब उसने लोगों का साक्षात्कार लिया, तो वह केवल तथ्य चाहता था। और हस्ताक्षर पंक्तियों, बस तथ्य, महोदया। तथ्यों के अलावा कुछ नहीं।

जैसा कि मैंने न्यायाधीश 4 पढ़ा, विशेष रूप से यहां नृषिकर्ष, मेरे लिए यह इतिहास के सारजेंट फ्राइडे के दृष्टिकोण की तरह है। सरिफ तथ्यों। तो, अध्याय 4 श्लोक 23-24 में, उस दिने परमेश्वर ने कनान के राजा याबीन को इस्राएल के लोगों के सामने वश में कर लिया।

इस्राएल के लोगों का हाथ कनान के राजा याबीन पर तब तक बढ़ता गया जब तक कि उन्होंने कनान के राजा याबीन को नष्ट नहीं कर दिया। वह गद्य सारांश है। प्रोसकि, यह बहुत नाटकीय नहीं है।

कुछ मायनों में यह मेरे लिए वीडियो कैमरा, 7-11 में सुरक्षा कैमरा जैसा है। यह जो हो रहा है उसकी एक तस्वीर देता है लेकिन आपको भावना नहीं मलित है, आप वास्तव में कार्रवाई में शामिल नहीं होते हैं। जबकि कविता बहुत रंगीन है, बहुत भावपूर्ण है, बहुत रचनात्मक है।

और जब हम अध्याय 5 पर पहुंचते हैं तो हम यही देखते हैं। और आइए यहां कुछ चीजों पर नजर डालें। न्यायाधीशों के अध्याय 5 में श्लोक 4 को देखें। यह कहता है, हे परभू, जब तू सेईर से निकलकर एदोम के देश से चला, तब पृथ्वी कांप उठी, और आकाश से टपकने लगी, और बादलों से जल बरसने लगा। खैर, हमने अध्याय 4 में भूकंप और तूफान और इस तरह की चीजों के बारे में कुछ भी नहीं पढ़ा है। इसलिए, यह एक अतिरिक्त परंपरेक्ष्य या शायद एक आलंकारिक परंपरेक्ष्य है।

पद 5, पहाड़ यहोवा के सामने कांप उठते हैं, यहां तक कि सीनै भी इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के सामने कांप उठता है। तो फिर, हमारे पास यहां ऐसी कल्पना है जो अध्याय 4 में नहीं मलित है। और फिर भी यह उसी पर प्रतबिंबित कर रहा है। पद 20 को देखो।

स्वर्ग से तारे लड़े। वे अपने मार्ग से सीसरा के विरुद्ध लड़े। अध्याय 4 में सीसरा उस सेनापति का राजा है। अध्याय 4 में सतारों का कोई उल्लेख नहीं है। और मैं सहज रूप से सोचता हूं, जैसा कि हम उस अनुच्छेद को पढ़ते हैं, हम नहीं सोच रहे हैं, आप जानते हैं, कोई विशेष चीजें ही रही हैं।

क्या ईश्वर ने याबीन, ससैरा पर प्रहार करने के लिए विशेष गामा करिणें भेजी? मुझे ऐसा नहीं लगता। पाठ में गद्य वृत्तांत में से किसी का भी उल्लेख नहीं है। मुझे लगता है कि मैं सहज रूप से समझता हूं, ऐसा लगता है जैसे जीत इतनी भारी है, ऐसा लगता है जैसे प्रकृति की सभी ताकतें याबीन और ससैरा के खिलाफ खड़ी थीं।

पहाड़ काँप रहे थे, धरती काँप रही थी, आकाश से पानी गरि रहा था और यहाँ तक कि तारे भी कनानियों से लड़ रहे थे। लेकिन हम इसे शाब्दिक रूप से नहीं लेते हैं। मुझे इंटरनेट पर नासा का कोई संदर्भ नहीं मिला, कोई ससैरा के समय में लड़ रहे सतारों की तलाश कर रहा है, पद 20 के पीछे के वैज्ञानिक अनुमान को खोजने की कोशिश कर रहा है।

इसलिए, हम सहज रूप से समझते हैं कि कविता बनाम गद्य की व्याख्या कैसे की जाए। तो पृष्ठ भूमि के रूप में इन सबके साथ, मुझे लगता है कि यह ठोस पृष्ठभूमि है क्योंकि हम इसे बाइबल में ही पाते हैं। हम

वाम क्षेत्र से नहीं आ रहे हैं, किसी चमत्कार को समझाने की कोशिश नहीं कर रहे हैं, बल्कि हम देख रहे हैं कि कैसे बाइबल हमें गद्य बनाम कविता की व्याख्या करने के बारे में निर्देश देती है।

अइजाओन की घाटी में। वह सब काव्यात्मक है।

और श्लोक 13 के मध्य में याशर की पुस्तक का संदर्भ देते हुए, उस पुस्तक का उल्लेख केवल एक बार 1 शमूएल अध्याय 1 में किया गया है। यह एक अतिरिक्त-बाइबलि पुस्तक है जो शायद ही कभी खीई हो। लेकिन फिर यह चलता रहता है, और श्लोक 13 का शेष भाग, मैं यह भी तरक दंगा कि यह काव्यात्मक है। अब अधिकांश बाइबलि संस्करण इसे कविता के रूप में नहीं छापते हैं, लेकिन विभिन्न कारणों से, मुझे लगता है कि श्लोक 13 का दूसरा भाग भी काव्यात्मक है।

और जब यह कहता है, कि सूर्य आकाश के मध्य में रुक गया, तो उसे पूरे दनि अस्त होने की कोई जल्दी नहीं थी। वह भी आलंकारिक भाषा है। यह शाब्दिक नहीं है।

और इसलिए, यह सब, और कहने के लिए कुछ और बातें। श्लोक 12, मैं देखूंगा, यह कहता है, जसि दनि यहोवा ने एमोरियों को इस्राएलियों के हाथ में कर दिया, उस दनि यहोशू ने यहोवा से बातें कीं। मैं देखूंगा कि उसने क्या कहा। अगला शब्द, यह कहता है, उसने इजराइल को उस दृष्टि में कहा।

क्या यहोशू ने ये शब्द बोले थे? या भगवान ने किया? और मुझे लगता है कि विश्वास करने के कई कारण हैं कि यह भगवान ही हैं जिन्होंने सूर्य और चंद्रमा को ये शब्द कहे, यहोशू ने नहीं। और इसलिए, हम इस परिच्छेद में ईश्वर को प्रथमिक अभिनिता के रूप में देखते हैं। यदि रखें, पूर्ववर्ती श्लोक, श्लोक 10 में, प्रभु ने कनानियों को दहशत में डाल दिया था।

उसने उन पर बहुत बड़ा प्रहार किया। श्लोक 11 के मध्य में, प्रभु ने बड़े-बड़े ओले आदि गिराये। और इसलिए, सूर्य और चंद्रमा सहित प्रकृति के सभी तत्वों पर भगवान का नियंत्रण है।

यहोशू के ऐसा करने की तुलना में परमेश्वर के लिए सूर्य और चंद्रमा को रुकने आदि का आदेश देना कहीं अधिक उपयुक्त है। तो, मेरा विचार यह है कि इजराइल की दृष्टि में उन्होंने जो कहा उसका विषय यह है कि ईश्वर ऐसा कर रहा है। तो, यहोशू ने पद 12 में प्रभु से बात की।

उसने क्या बोला? हमारे पास शब्द नहीं हैं, लेकिन मेरा विचार है कि उसने प्रार्थना करते हुए कहा, हे प्रभु, हमारी सहायता करो, हमारा उद्धार करो। तो, भगवान ने जवाब देते हुए कहा, सूरज अभी भी खड़ा है। दूसरे शब्दों में, यहाँ कनानियों के विरुद्ध भारी विजय।

और फिर पद 13 में एक और बात, यह कहती है, सूर्य तब तक रुका रहा, चंद्रमा तब तक रुका रहा जब तक कि रिष्टर ने अपने शत्रुओं से बदला नहीं ले लिया। ग्रीक अनुवाद में इसका एक बहुत ही दिलचस्प संस्करण है। यह कहता है कि जब तक परमेश्वर ने अपने शत्रुओं से प्रतिसोध नहीं लिया।

और मुझे लगता है कि यह बेहतर रीडिंग हो सकती है। और यह हमें कनानियों पर विजय पाने की क्रियाओं का विषय होने के नाते ईश्वर की एक अटूट श्रृंखला देता है। और इसलिए, यह

ईश्वर ही वजिय दूला रहा है, ईश्वर प्रतशिोध ले रहा है, ईश्वर सूर्य और चंद्रमा को रुकने का आदेश दे रहा है।

और यह सब छंद 6 से 11 में जीत की जबरदस्त प्रकृतिके बारे में बात करने के लिए काव्यात्मक है। इसलिए, छंद 12 और 13, मेरे विचार में, छंद 6 की लड़ाई पर एक संक्षिप्त, अब, एक संक्षिप्त भजनात्मक प्रतबिबि है। 11 तक उसी तरह जैसे नरिगमन 15 14, नयायाधीश 5 और नयायाधीश 4 की लड़ाई पर एक लंबा भजनात्मक प्रतबिबि है। इसलिए, मुझे नहीं लगता कि पृथ्वी के अपनी धुरी पर घूमने को रोकने का कोई बड़ा चमत्कार था। मुझे लगता है कि भगवान का एक बड़ा चमत्कार था कि किनारियों पर ओलावृष्टि हुई।

और भजनात्मक चतिन का यह संक्षिप्त, संक्षिप्त वसिफोट उसी पर विचार करने के लिए है। यह लोकप्रिय पारंपरिक दृष्टिकोण नहीं है, लेकिन मेरा मानना है कि यह उन चीजों में नहिंति है, जिन्हें हम पवित्रशास्त्र में कहीं और देखते हैं। मुझे समाप्त करने दीजिए, आइए इस खंड को समाप्त करें, और फिर हम शेष अध्याय को समाप्त करेंगे।

एक और बात जो हम कह सकते हैं वह है, श्लोक 14, यह कहता है, और पारंपरिक दृष्टिकोण सोचता है, ठीक है, नश्चिती रूप से, ऐसा कोई दिन नहीं रहा है, क्योंकि पृथ्वी ने कभी भी इस तरह से घूमना बंद नहीं किया है। विश्व इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है। लेकिन अगर आप कविता को ध्यान से पढ़ें, तो वह यह नहीं कह रही है।

यह नहीं कहा जा रहा है, जब पृथ्वी ने घूमना बंद कर दिया था, जब सूर्य चंद्रमा पर स्थिर खड़ा था, तब से पहले ऐसा कोई दिन नहीं था। यह कहता है, बल्कि, आप इसका अनुवाद कर सकते हैं जैसे कि परभु ने एक आदमी की आवाज का पालन किया क्योंकि परभु ने इस्राएल के लिए लड़ाई लड़ी। इस प्रकार इस्राएल के लिए परमेश्वर की लड़ाई की क्रियाओं का क्रम समाप्त हो जाता है।

और उसने एक आदमी की आवाज कैसे सुनी? यह तब है जब यहोशू ने कहा, श्लोक 12, दलिचसुप, यह सटीक शब्द, परभु ने एक आदमी की आवाज का पालन किया, और हम पहले से जानते हैं, भगवान ने नश्चिती रूप से प्रार्थना का जवाब दिया, इब्राहीम और मुसा और अन्य, लेकिन पवित्रशास्त्र में इससे पहले, कोई जगह नहीं है, ऐसी कोई जगह नहीं है जहां यह शब्द पाया जाता है, जहां भगवान किसी व्यक्ति की आवाज का जवाब दे रहे हैं या उसका अक्षरशः पालन कर रहे हैं। इसलिए, मुझे लगता है कि यहां कहने का तात्पर्य यह है कि, इस बिंदु तक, किसी इंसान द्वारा कभी भी कोई प्रत्यक्ष अनुरोध नहीं किया गया है कि भगवान ने उस शब्दावली का उपयोग करते हुए, उसी तरह से उसका अक्षरशः पालन किया हो और उसका पालन किया हो। तो वहां भी, सावधानीपूर्वक पढ़ने से हमें कुछ अलग देखने में मदद मिलती है, जिसकी हम अक्सर कल्पना करते हैं।

सोचने के लिए कुछ है, और उसके बारे में अपना नरिणय लेने के लिए मैं इसे आप पर छोड़ दूंगा। पुनः इसकी आगे की चर्चा आप लगभग किसी भी टिप्पणी में पा सकते हैं। मेरे विचार में, आप इसे जोशुआ की पुस्तक में मेरी टिप्पणी में देख सकते हैं, जहाँ मैं अन्य वकिलों पर भी चर्चा करता हूँ।

ठीक है, यह कहता है, यहोशू और उसके साथ सभी इस्राएल गलिगाल के शविरि में लौट आए, पद 15। वहाँ थोड़ी समस्या है, क्योंकि हम श्लोक 43 में देखते हैं, अध्याय का अंतिम पद

, वही सटीक पद। यहोशू समस्त इस्राएल समेत गलिगाल की छावनी में लौट आया।

तो, क्या वह दो बार वापस आया? शायद। लेकिन यह भी संभव है कि यह एक ही श्लोक की दो अलग-अलग जगहों पर आकस्मिक नकल मात्र हो। श्लोक 42 के अंत में, यह कहता है, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इस्राएल के लिए लड़ा था।

श्लोक 14 के अंत में, यह इस बात की बात करता है कि प्रभु ने इस्राएल के लिए लड़ाई लड़ी। तो यह हो सकता है कि किसी प्रतिलिपिकार ने, पाठ की प्रतिलिपि बनाने के इतिहास में, इजराइल के लिए लड़े वाक्यांश को देखा हो और इसे दो बार कापी किया हो, या इसे गलत जगह पर डाला हो। मुझे लगता है, शायद यह वास्तव में श्लोक 15 में नहीं है, यह शायद अध्याय के अंत में है।

लेकिन अब, शेष अध्याय में, इसके दो भाग हैं। श्लोक 16 से 28 गबोनियों के साथ इस युद्ध के परिणाम को दर्शाते हैं। मूल रूप से, यह जोशुआ और लोगों को पश्चिम और फरि दक्षिण की ओर दुश्मन का पीछा करते हुए दिखाता है।

और इसलिए, यह एक प्रकार से कनानियों पर इस्राएलियों की वजिय की दक्षिणी जीत है और पांच राजाओं को नष्ट कर दिया। और यह इजराइल के लिए एक अद्भुत बात है. तो, हम उसे वहीं छोड़ देंगे।

लेकिन फरि, श्लोक 29 से शुरू करके, हमारे पास यहाँ से श्लोक 39 तक, एक व्यापक अवलोकन, दक्षिण के और अधिक शहरों का व्यापक अवलोकन है। और श्लोक 28 से शुरू करते हुए, वास्तव में, आप मक्केदा नामक एक शहर देखेंगे। और फरि छह और शहर हैं।

दूसरे शब्दों में, सात शहर हैं जिनका नाम उनके नाम से रखा गया है। मक्केदा, आयत 28. आयत 29, लबिना।

श्लोक 31, लाकीश। श्लोक 33, गीज़र। श्लोक 34, एग्लोन। श्लोक 36, हेबरोन। और पद 38, दबीर। ये सभी दक्षिण के शहर हैं।

और यदि आप इस अनुभाग को देखें, तो यह प्रत्येक का एक प्रकार से फारमूलाबद्ध दोहराव है। प्रत्येक के साथ एक या दो श्लोक ही हैं। और उन्होंने इसके खिलाफ लड़ाई लड़ी... इसलिए, उदाहरण के लिए, हम पद 31 को देखेंगे।

यहोशू और उसके साथ सभी इस्राएल लबिना से लाकीश तक गए। उन्होंने इस पर कब्जा कर लिया था, इसके खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। परमेश्वर ने लाकीश को उनके हाथ में दे दिया।

उन्होंने इस पर कब्जा कर लिया. दूसरे दिन उस में के सब मनुष्योंको तलवार से मार डाला, जैसा उन्होंने ने लबिना से किया था। तब पद 33 में गेजेर का राजा होराम लाकीश की सहायता करने को आया, और यहोशू ने उसे और लोगोंको मार डाला।

और ऐसा ही चलता है, सात बार। बस हमें यही पता है। अब, श्लोक 40 से 43 अंतिम सारांश की तरह है, या 40 से 42।

और यह कहता है, कियहोशू ने सारे देश को, अर्थात् पहाड़ी देश, नेगेव, नीचे के देश, और ढलानों को, उनके सब राजाओं को मार डाला। तो, मुझे ऐसा लगता है कि इसका मतलब यह है कि उन्होंने केवल उन सात शहरों पर ही नहीं, बल्कि दक्षिण में हर किसी पर जीत हासिल की है। और वे सात शहर महत्वपूर्ण शहरों के प्रतिनिधि हैं।

शायद यह एक प्रतीकात्मक संख्या है, पूर्णता के विचार की संख्या सात। लेकिन मुझे लगता है कि उन्हें दक्षिण में व्यापक विनाश का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना गया है। और यह प्रक्रिया वहाँ पूर्ण विनाश में से एक थी।

तो, आईए अध्याय के अंतिम पैराग्राफ को देखें, जो छंद 40 से 43 है, या विशिष्ट फोकस 40 से 42 है, जो वजिय की प्रकृति के बारे में बात करता है। तो, पद 40 कहता है, यहोशू ने सारे देश, पहाड़ी देश, नेगेव, तराई देश, ढलानों, उनके सब राजाओं को मार डाला। उसने किसी को भी शेष नहीं छोड़ा, विनाश के लिए समर्पित किया।

वहाँ वह शब्द है, हराम, विनाश के लिए समर्पित। सब कुछ जो साँस लेता था, ठीक वैसे ही जैसे प्रभु परमेश्वर ने आज्ञा दी थी। यहोशू ने उन्हें कादेश, बरनेया, सुदूर दक्षिण में, गाजा तक, और दक्षिण पश्चिम में गोशेन के सारे देश में मार डाला।

वह मसिर से नीचे, शायद, उत्तर में ऊपर गबिोन तक है। और पद 42, यहोशू ने एक ही समय में इन सभी राजाओं और उनकी भूमि को पकड़ लिया, क्योंकि, फरि से, भगवान् भगवान् ने इस्राएल के लिए लड़ाई लड़ी। तो भगवान् के योद्धा होने का वह विचार यहाँ पाया जाता है।

लेकिन इस तस्वीर से ऐसा लगता है मानो कोई बचा ही नहीं है। सारी लाशें, कोई साँस नहीं ले रहा, और बस इतना ही। और फरि भी, हम बाद के अध्यायों में, अध्याय 13 से शुरू करते हुए पाते हैं, कि पाठ हमें अध्याय 13 में बताता है कि अभी भी बहुत अधिक भूमि जानी बाकी है।

हमने पहले भी उल्लेख किया है कि ऐसे स्थान भी हैं जहाँ यह कहा गया है कि अमुक जनजाति अपने निवासियों को अपने कक्षेत्र से बाहर निकालने में सक्षम नहीं थी, आदि। इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि इन बाद के अध्यायों में, इन कक्षेत्रों में रहने वाले लोग हैं इस्राएलियों का पूरी तरह सफाया नहीं हुआ। और इसलिए हम उन चीजों को एक साथ कैसे लाते हैं? मुझे लगता है, फरि से, हम इसे एक सारांश कथन के रूप में देख सकते हैं, जिसमें यहाँ की लड़ाइयों की सभी विशिष्टताओं, अध्याय 10 में यहाँ की विभिन्न लड़ाइयों का सारांश दिया गया है, और मूल रूप से कहा गया है कि भगवान् ने इस्राएलियों को पूरी जीत दी।

राष्ट्र उससे डरते थे, या यदि वे आक्रमण पर आते थे, तो परमेश्वर ने वजिय दलाई, और मूलतः यही था। लेकिन वस्तुतः हर अंतिम व्यक्ति नहीं। वहाँ स्पष्ट रूप से कुछ जीवित बचे थे, और इसलिए इसे एक आलेखिक कंबल बयान के रूप में देखा जाना चाहिए जो भगवान् की वजिय की विशालता को व्यक्त करने की कोशिश कर रहा है, और विशिष्ट प्रकार की भूमिका थोड़ी देर बाद सामने आती है जहाँ हम पाते हैं कि कुछ वास्तव में जीवित बचे थे।

लेकिन यह एक महत्वपूर्ण अध्याय है। यह, सबसे पहले, अध्याय 9 से गबिनाइट संधि का परीक्षण दिखाता है। जब गबिनियों पर हमला हुआ तो क्या इजराइल उनके प्रति विफादार रहेगा? और उत्तर हाँ था, और परमेश्वर ने वहाँ

ओलावृष्टि के समय गब्रिन में बड़ी वजिय दी। उस पर थोड़ा भजनात्मक प्रतबिबि, उसका जश्न मनाना, जश्न मनाना का भगवान ने वास्तव में एक आदमी की आवाज, यहोशू की प्रार्थना सुनी, पद 14।

और फिर उसके बाद, राजाओं को पकड़ना, श्लोक 16 से 28 तक। और फिर यहाँ पूरे दक्षिणी अभियान, सात शहरों और फिर वहाँ के अंतिम कथनों का सारांश विवरण है। तो, यह कई कारणों से एक बहुत ही प्रभावशाली अध्याय है, जिनमें से एक मुझे नहीं लगता कि यह अभी भी शाब्दिक रूप से समझा गया है, लेकिन मुझे आशा है कि आप देखेंगे कि ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि मैं चमत्कारों में विश्वास नहीं करता हूँ, ऐसा इसलिए है क्योंकि मुझे लगता है कि यही वह जगह है जहाँ पाठ्य साक्ष्य हमारा नेतृत्व करेंगे।

यह डॉ. डेविड हॉवर्ड रूथ के माध्यम से जोशुआ की पुस्तकों पर अपने शक्तिषण में है। यह सत्र संख्या 15, जोशुआ 10, दक्षिणी अभियान है।